भगवत् कृपा

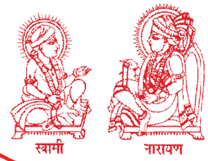

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 27 अंक : 4 | 15.7.2004 गुरुवार (जुलाई-अगस्त) | वार्षिक चंदा : 50.00

पूरा श्वास लो, छाती भर कर मस्तक तक... अटको, भावना करो....

यह ब्रह्मनाद पुराने जोगियों को प.पू. काकाजी की अलमस्त ध्यानस्थ मूर्ति की इदम् स्मृति करा देता होगा। प.पू. काकाजी की धून्य का ब्रह्मनाद व ये शब्द जिन-जिन्होंने सुने या उन्हें धून करते देखा है, वो गूंज उनके जीवन की आख़िरी सांस तक कानों में गूँजती रहेगी ! इतना ही नहीं, बल्कि हर प्रसंग पर वह चमत्कारी मूर्ति प्रगट होकर सहाय रूप होती ही होगी... प.पू. काकाजी सालों पहले धून कराने के बाद कुंभक कराते-ध्यान कराते हुए ऊपर लिखे आशीर्वाद रूप शब्द बोलते और उनके ये शब्द मुमुक्षुओं के भीतर तक उतर जाते... अनेक मुमुक्षुओं को अपनी इन्द्रियों-अंतःकरण का शुद्धिकरण होने और मन-स्वभाव की जड़ता पिघलने का अनुभव भी होता !

परंतु उस समय प.पू. काकाजी की ऐसी बातों को हमने नज़रअंदाज ही किया। पर यहाँ अब—मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के समय के एक प्रसंग की स्मृति हो आती है कि एक बार भराई गाँव के दरबार सिद्ध-संत की खोज में काफी जगह घूम-फिर कर जूनागढ़ में स्वामी के पास लौटे... वहाँ जो ब्रह्मज्ञान उन्होंने सुना तो उनके मुँह से सहज ही ये शब्द फिसल गए कि— ***'पारठ भैंस का दूध तो हमारे घर में ही है और मैं तो यूं ही सब जगह की चमक-दमक से चौंधिया कर घूमता रहा।'***

आज देखें तो चारों ओर बीमारियों से परेशान होकर हर एक व्यक्ति **'योग'** की ओर भाग रहा है... जगह-जगह के केन्द्रों में भटक रहा है ताकि **'योग-प्राणायाम'** इत्यादि का सहारा लेकर स्वस्थ हो जाए और...प.पू. गुरुजी जब ये बातें सुनते—देखते हैं, तो उन्हें भीतर में खूब दुःख होता है कि— ***अरे ! प.पू. काकाजी तो आज से 25-30 साल पहले धून दौरान प्रभु में लय-लीन करवा कर हमें कितनी सरलता व सरलविधि से 'प्राणायाम' सिखाते थे !*** वे परभाव में बोलते भी कि— ***'आप मेरे पास आओ सात दिन में कुंडलिनी जाग्रत करवा दूँगा।'*** पर तब— कई बार तो हमारे देहभाव की घुटन में हम ऐसा भी सोचते कि— ***पता नहीं यह धून अब कब बंद कराएंगे ?*** कैसी हमारी जीवदशा और कैसी सत्पुरुष की पारदर्शी विशाल दृष्टि !

यूं ऐसी कई-कितनी बातों पर प.पू. काकाजी बोलते— ***'राजा ! हवे डमणियामां दिल्ही नहीं जवाय...'*** यानि— अब बैलगाड़ी से दिल्ली जा नहीं सकते, नए ज़माने के साथ-साथ कदम उठाओ... खूब गहराई से सोचें कि **अध्यात्मयोगी होने के बावजूद भी वे बदलते युग के साथ रॉकेट की स्पीड से दौड़ने वाले असली आर्षदृष्टा क्रांतिवीर थे !** मनधारी तपस्या, भेड़चाल की साधना—व्रत, झूठी वाहवाही-मान पाने की महत्वाकांक्षाओं इत्यादि पर उन्होंने लकीर खींच दी थी— झुठला दिया था। वे कहते कि— सत्पुरुष की आज्ञा से सिर्फ घंटी बजाओ, वो आत्मसत्ता रूप वर्ता कहा जाए। **ये थे भावी नवयुग के लिए उनके अद्भुत सरल उपाय-दिव्य शंखनाद !**

वे अपनी पारदर्शक दृष्टि से आने वाले 'कल' को देख भी रहे थे, तभी तो कई बार बोलते भी कि— ***'हमणां जो नहीं वर्तो तो आगळ चुमाईने वर्तवु पडशे।'*** यानि— अगर अभी तुम नहीं समझोगे तो आगे मजबूरी-लाचारीवश—नज़र झुका कर-मायूस होकर तुम्हें वर्तना पड़ेगा। **आज उनकी कही एक-एक बात आख़िर सच हो रही है...** वैज्ञानिक युग में कम्प्यूटर वगैरह से दिन-प्रतिदिन जो आश्चर्यजनक प्रगति

हो रही है, उसी से स्पष्ट पता चलता है कि प.पू. काकाजी तो हमें काफी समय पहले से आने वाले युग के लिए तैयार करने लग पड़े थे कि इस दौड़ में हम कहीं पीछे ना रह जाएं। पर, यह हमारी कमनसीबी कही जाए कि– **हमने उस समय हमारी मेढ़क बुद्धि से उन्हें ही अन्डर एस्टिमेट करते हुए उनकी बातों के तथ्य को समझा नहीं–लापरवाह रहे और स्वीकारा नहीं।**

सो, अब की बार हर साल होते मई-जून के एक महीने के '**जपयज्ञ की अनुष्ठान शिविर**' में प.पू. गुरुजी ने इधर-उधर दौड़ादौड़ करने, घूमने-भटकने की बजाय प.पू. काकाजी की बातों को गंभीरतापूर्वक लेकर उनकी भांति '**प्राणायाम**' करना सिखाया व अभ्यास भी कराया। फलस्वरूप, **प.भ. वालिया साहेब, प.भ. मोतीलाल बाजवानजी, प.भ. प्रभाकरभाई जैसे प्रगट के निष्ठावान** मुक्त जो इस प्रक्रिया के माहिर हैं, उनके मार्गदर्शन से करीब दो सौ हरिभक्त रोज लाभान्वित हुए !

प.पू. काकाजी महाराज की जयंती की स्मृति में एक महीने के इस अनुष्ठान शिविर का आरंभ गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रागट्य तिथि एवं प.पू. गुरुजी के भागवती दीक्षा दिन-वैशाखी कृष्णा द्वादशी के मंगलकारी दिन यानि– **15 मई 2004**, शनिवार की सुबह साढ़े छः बजे हुआ। अमदावाद से आए आत्मीय स्वजन **प.भ. कन्हैयालालजी** ने ज्योत प्रज्ज्वलित करके इसका उद्घाटन किया। प्रति वर्ष होते इस रीजेन्युएटींग कोर्स-रिफ्रेशर्स कोर्स का लाभ लेने शिविर में मुंबई, अमदावाद, राजकोट एवं पंजाब के मुक्त विशेष रूप से दिल्ली आते रहे...

प.पू. गुरुजी ने–

प.पू. काकाजी महाराज की परावाणी के एक-एक शब्द को गहराई से समझाने,

हमारी बारीक-बारीक कमियाँ-दोष बता कर,

करोड़ों जन्मों से हमारी चेतना पर लगे धब्बों को मिटाने हर प्रकार से स्वयं गरजु बन कर अत्यधिक परिश्रम किया। सुबह चार बजे जाग कर पौने छः बजे तो वे खुद तैयार होकर भक्तों के आने की राह देखते सोफे पर बैठे मिलते और उन्हें यूं देख कर **दूसरे दिन वहां जल्दी पहुँच जाने की हमें प्रेरणा मिलती–बल मिलता** !

12 जून, शनिवार की सुबह **प.पू. काकाजी की जयंती मना कर 'जपयज्ञ' की पूर्णाहुति हुई।** दूसरे दिन–**13 जून**, रविवार की सुबह एक विशिष्ट '**महापूजा**' का आयोजन किया गया था और... इसे मानो प.पू. काकाजी ने रिकॉग्नाईज़ भी कर दिया; क्योंकि 12 जून को प.पू. काकाजी की परावाणी में सभी ने सुना कि– '**कल मैं महापूजा करने वाला हूँ।**' सच ! 13 जून की सुबह प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में आयोजित इस महापूजा में सभी ने अलग ही अनुभूति करी–**प.पू. काकाजी की दिव्य हाज़िरी की प्रतीति हुई !**

प.पू. गुरुजी के रूप में प.पू. काकाजी द्वारा मिली प्रभुधारक विभूति-अनमोल भेंट को अंतर से नमन, धन्यवाद-धन्यवाद ! दूर-सुदूर रहने वाले मुमुक्षुओं को *'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'* के अंतर्गत अब इनकी बातों का लाभ मिलता रहेगा...

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

✱ प.पू. काकाजी कई बार कहते कि– परीक्षित को चाहे भय से-डर से थी, पर ऐसी तालावेली-लगन लगा देनी।
प.पू. गुरुजी ने यह बात समझाते हुए कहा कि– हमें ऐसी लगन नहीं लगती। सो ही हमारा काम नहीं बनता।

✱ इस सत्संग में एक चीज है कि कोई बात अपने से नहीं बनती है और हम चाहते हैं कि हमें वो करना है या कोई अच्छी चीज दूसरे के अंदर हो व हम चाहें कि हम में भी वो आ जाए;
तो, अपनी कोशिश-प्रयत्न करने पर थोड़े दिन ऐसा चलेगा, पर फिर दोबारा हमारा पुराना ढाँचा वापिस आ जाएगा। सो, उसका तरीका यह है कि जिसमें वो गुण हो उसके प्रति हम सद्भाव रखें कि ओहो ये कितना अच्छा है ! तो, वो गुण ऑटोमैटिक अपने अंदर आ जाएंगे।
लेकिन, हम उल्टा करते हैं। हम सामने वाले के साथ ईर्ष्या करते हैं। उससे इरिटेट हो जाते हैं कि ये कहाँ से आ गया ? श्रीजी महाराज ने वचनामृत प्रथम प्रकरण-४ में कहा कि यदि ईर्ष्या करनी भी हो-तुम्हें वो गुण पाना हो, तो नारदजी ने जैसी तुबंरुजी से करी–वैसी करना। तुंबरुजी के पास जाकर ही नारदजी ने गानविद्या सीखी ! यह सारे सत्संग का कायदा क-ख-ग... बेझिक–रेडिकल प्रीन्सीपल्स हैं।
ऐसी बातें पकड़ रखी हों-सच्ची मानी हों, तो प.पू. काकाजी कहते कि जो चीज तुमसे मचेड़-मचेड़ कर भी नहीं होती हो, वो अपने आप सहज हो जाएगी।

* हमें कई बार होता है कि यह धून–'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' करने से क्या होगा ? पर, ये धून बहुत पावरफुल है।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस देव भजन करा रहे थे। एक नए व्यक्ति को वो सब एबसर्ट लगा। वो नाराज़ होकर अंटशंट बोलने लगा। तो रामकृष्ण परमहंस देव ने उसे चुप कराते हुए जोर से कहा– 'साला, चुप बैठ जा।' तब वो व्यक्ति और भी अधिक नाराज़ हो गया कि ये कैसे साधु हैं, जो गाली दे रहे हैं !

फिर रामकृष्ण परमहंस देव ने उसे समझाया कि देखो, तुम्हें एक शब्द कितना इरिटेट कर गया ? तो, ये शब्दों का प्रभाव है ! यूं प्रभु के नामरटन के शब्दों की कैसी अलग असर होगी, वह सोचना !

* प.पू. काकाजी ने एक जगह पर आशीर्वाद दिए हैं कि धून सब कुछ करेगी-(धून ज बधुं करशे)। पर, हम यह ठोस मानते नहीं हैं कि हमारे हर काम, हर समस्या, हर उलझन, हर मुश्किल-हम धून करते रहेंगे, तो अपने आप ऑटोमेटिकली हल होती जाएगी।

* प्रभु को एक कायदा है कि जो उसका भरोसा करता है, वे उस भरोसे को टूटने नहीं देते। लेकिन हमारा भरोसा पार्शियल होता है। सो ही **हम स्टेन्डबाइ एरेन्जमेन्ट रखे रखते हैं। प्रभु को वो बर्दाश्त नहीं है। प्रभु का भरोसा टोटल रखना होता है।**

* **संत को कभी कोई स्ट्रेस या प्रॉब्लम होता ही नहीं। त्यागी को–गृहस्थी को** प्रॉब्लम होगी, गुत्थी होगी, उलझन होगी, परेशानी **होगी।**

तो यह एक महीना प.पू. काकाजी की बात का विश्वास रख कर कि 'ये धून सब कुछ करेगी'–हम ऐसा तीव्र भजन करें कि सब सुलझ जाए।

* लोया 10 के वचनामृत में श्रीजी महाराज ने लिखा है कि **भगवान व संत जो बात कहते हैं, वो बात वैसी ही है– यह जो माने, वो व्यक्ति सुखी।** हमें वो भरोसा नहीं है, सो ही दुःखी रहते हैं, परेशान रहते हैं।

* सुबह साढ़े छः बजे भजन के लिए एक महीने तक सब हरिभक्तों के मंदिर आ जाने की बात पर प.पू. गुरुजी बोले कि–

यदि प.पू. काकाजी स्थूल रूप से होते तो हर जगह जा-जाकर हर एक को कहते कि आओ दिल्ली, देखो–सब रोज सुबह साढ़े छः बजे तो धून के लिए हाज़िर हो जाते हैं... कितनों को तो वे इन्वाईट करते कि राजा ! धून में दिल्ली चलो–धून में दिल्ली चलो।

* एक महीना सारी कथावार्ता को पोझीटिव सोच रख कर सुनना और दिल की सच्चाई से अभीप्सा करना कि मुझे बदलना ही है, सो हे महाराज मुझे बदल दो... हे महाराज मुझे बदल दो।

* प.भ. कन्हैयालालजी की एक बात पर मैं बहुत खुश हो गया। अपने किसी काम के लिए वो मेरे पास आए, सो मैंने कहा कि चलो धून करते हैं। तो, कन्हैयालाल बोले कि– गुरुजी धून वही करें कि हे महाराज यह मेरे हक में हो, तो यह काम हो वर्ना भले ना हो।

* कई बार हमारा कोई काम ना होने पर हम संत की कही ऐसी बात को 'दिलासा' मान लेते हैं कि बस हमें समझाने-पटाने कह देते हैं कि तुम्हारे हक में नहीं होगा, सो महाराज ने नहीं करा। संत के प्रति कैसा हमारा मायिकभाव ?

* 'धून' कोई 'लवरी' (फिजूल का चिल्लाना) नहीं है, बकवास नहीं है; बल्कि प्रभु के साथ का एक वार्तालाप है, प्रार्थना है, अपील है, मर्सीपिटीशन है और प्रभु सुनते ही हैं।

* हम तो महाराज को धमकी जैसी भी देते हैं कि महाराज आपने अगर हमारा यह काम नहीं करा, तो हमारी श्रद्धा टूट जाएगी। मानो हमारे ना आने से महाराज का एक 'ग्राहक' कम हो जाएगा !

* हमेशा प्रार्थना में ऐसा कहना चाहिए कि प्रभु मेरे हित में जो हो वो कर देना... फिर देखना कि महाराज कितनी अच्छी तरह से सब सेट करते हैं। कितने ही प्रसंगों में हमने भी तो यह अनुभव किया है !

* गुरु के वचन का पालन करने से अखंड सुख, शांति और आनंद मिलता है। प.पू. काकाजी बोले कि मैं तुम्हारे सामने इसका सेम्पल हूँ...

* हम कई बार (उतावले होकर) संत से पूछने लगते हैं कि कब तक धून करा करनी ?

जब तक हमारा मन शांत ना हो जाए... आनंद में वापिस ना आ जाएं... भीतर में जब तक सुख-सुख फील ना हो, तब तक धून किया करनी।

* भगवान और संत के द्वारा इतने-इतने अनुभव होने के बावजूद भी हम डर जाते हैं, चिंता में चले जाते हैं–होगा या नहीं होगा, कैसे होगा ? कब होगा ? जब जरुरी होगा, तब हो ही जाएगा। हमें केवल विश्वास रख कर भजन किया करना है। *क्रमशः......*

पहली सितंबर... गुरुहरि प.पू. पप्पाजी का प्रागट्य दिन !

पहली सितंबर... गुरुहरि प.पू. पप्पाजी की जयंती का महामंगलकारी दिन... धरती पर जिनके प्रागट्य से अनंत चैतन्यों के भाग्य का मानो सूर्योदय हुआ। भगवान अखंड रखी ऐसी विभूतियाँ भगवान की आज्ञा से—भक्तों के भीतर की तीव्र पुकार से अनेक मुक्तों को अपना दिव्य संबंध देकर निहाल करने ही पृथ्वी पर प्रगट होती हैं।

ऋषि, मुनि प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए कठोर तप, कठिन साधना—साधन करते हुए हज़ारों वर्ष तक हिमालय में—जंगलों में लगे रहते हैं। तब भी जो प्राप्त नहीं होता, ऐसे सांगोपांग भगवान अखंड रखे प्रगट गुणातीत स्वरूप का संबंध, दर्शन, सेवा, समागम बिना कोई साधन के हमें मौज में प्राप्त हुआ है !

पाँच वर्ष की आयु में एक दिन प.पू. पप्पाजी खेलते-खेलते अपने दादाजी की गोद में आकर बैठे और दादा की दाढ़ी पकड़ कर कहने लगे कि— दादा ! दादा ! क्या आपको पता है मैं कौन हूँ ? दादा बोले 'नहीं बेटा।' तो, प.पू. पप्पाजी बोले कि— ***'दादा, मैं तो परमहंस हूँ और आपका कल्याण करने आया हूँ...'*** पाँच वर्ष की आयु में खूब गहराई लिए कहे गए ये शब्द उनके अनादि का ही स्वरूप होने का स्पष्ट दर्शन कराते हैं।

1952 की 3 फरवरी को प.पू. काकाजी तो प्रभु के साक्षात्कार के परम सुख के भोक्ता बने ही, साथ-साथ अपने प्रिय बड़े भाई प.पू. पप्पाजी को भी वह परम सुख मिले ऐसा भव्य संकल्प एक धोती को चीर कर किया ! फलस्वरूप 1952 की पहली जून के दिन **'आणंद'** में प.पू. पप्पाजी को प.पू. योगीजी महाराज की अनुभूति-प्रतीति हुई। **'गुरुहरि योगीजी महाराज ही श्रीजी का प्रत्यक्ष स्वरूप हैं—जोगी भगवान हैं और मैं तो जोगी का प्रकाश हूँ'**— ऐसा जीव में बैठ गया।

बस, उसी पल से स्वयं को आत्मा रूप मान कर पल-पल जीए। योगीजी के वे अंतर्यामी बन गए ! धाम-धामी और मुक्तों के सिवा बाकी सब कुछ नश्वर और तुच्छ बन गया !! गुरुहरि योगीजी महाराज में प्रत्यक्ष प्रभु की प्रतीति होने के बाद हर एक प्रसंग को 'योगी' अर्थात् अपने प्रभु का प्रसाद मान कर ही वे जिए हैं।

1965 की 21 जून को ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने 'गुणातीत ज्योत' का खात मुहूर्त करते हुए आशीर्वाद बरसाए कि—***'गुणातीत ज्ञान का संदेशा दुनियाभर में यहाँ से फैलेगा'*** और बहनों का कार्य करने की आज्ञा देते हुए प.पू. पप्पाजी को भव्य आशीर्वाद दिए कि—***'आप तो अखिल ब्रह्मांड का भार सह सको ऐसे हो...'*** उनके आशीर्वाद को प.पू. काकाजी—पप्पाजी ने ज्यों के त्यों अध्धर झेले और आज बापा के वे आशीर्वाद साकार हुए हम देख रहे हैं। 'गुणातीत ज्योत' के रूप में हम एक विशाल वटवृक्ष अर्थात्—प.पू. पप्पाजी द्वारा तैयार हुए चैतन्य स्वरूपों का दर्शन करने की परम धन्यता-दिव्य आनंद का अनुभव कर रहे हैं। प.पू. काकाजी—प.पू. पप्पाजी के अथक् परिश्रम, उनकी सेरेछाया में 'गुणातीत ज्योत' संबंध में आए-आते हर एक मुमुक्षु के कल्याण की खुल्ली-दिव्य राह बन गई है। वहां आने वाला हर एक व्यक्ति प.पू. पप्पाजी के दर्शन, सेवा, समागम करके स्वयं को धन्य-धन्य मानता है।

सच, धरती पर कोई अनोखा, निराला, नूतन महान युगकार्य कराने ही मानो दोनों भाईयों को गुरुहरि योगीजी महाराज ने चुना... संतों, बहनों, युवकों, गृहस्थों को 'अक्षर' की यात्रा पर अग्रसर करने के इस नूतन कार्य के उत्थान में प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी ने निज का सब कुछ समर्पित कर दिया और एक-दूसरे के पूरक बन कर धरती पर प्रकृति पुरुष के भाव से परे के 'गुणातीत समाज' की स्थापना करी-परवरिश करी।

बचपन से प.पू. पप्पाजी की जीवन शैली देखें, तो ऑनेस्टी और सिन्सियारीटी का वे मूर्तिमान स्वरूप... और सोने पे सुहागा कि वही जीवनशैली बापा का संबंध होने पर उन्हें पहचानने में भी रही। तभी तो अनेक मुमुक्षुओं को प.पू. पप्पाजी की ब्राह्मीस्थिति का दर्शन हुआ और... आज स्वयं बापा के अखंड धारक बन कर संतों, बहनों, युवकों, गृहस्थों के हृदय सिहांसन पर विराजमान होकर उन्हें ब्रह्म के दिव्यानंद का भोक्ता बनाने का एकधारा अविरत कार्य-श्रम कर रहे हैं। फिलहाल मौन धारण करके भी वे अनेक चैतन्यों का हर प्रकार से अविरत जतन कर रहे हैं। आज उनकी मौनभरी करुणामयी दृष्टि भी मानो दिव्यता का संदेश निरंतर देती ही रहती है। संकल्प से सभी के चैतन्यों की प्रगति करा रहे हैं। **भक्तों की आराधना ही मानो उनका जीवन है।** उनके द्वारा समय-समय पर दी गई सूझ हर एक साधक के लिए **'ब्रह्मऔषधि'** रूप है... आइए, उनके प्रागट्य

13 जून की सुबह प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में हुई इस महापूजा में सभी को प.पू. काकाजी की दिव्य हाज़िरी की प्रतीति हुई !

प.भ. वालिया साहेब, प.भ. मोतीलाल बाजवानजी व प.भ. प्रभाकर

ाई द्वारा मुक्तों को प्राणायाम सिखाकर - उसका अभ्यास भी कराया ।

12 जून, शनिवार की सुबह
प.पू. काकाजी की जयंती मनाकर एक महीने के 'जपयज्ञ' की पूर्णाहुति हुई।

दिन के शुभ अवसर पर उनके द्वारा दिये परामर्श को समझें।

'एक बार प.पू. पप्पाजी ने **'अखंड ब्रह्मानंद'** करने की बात करी, तो एक मुक्त ने पूछा कि– पप्पाजी ! अखंड ब्रह्मानंद यानि क्या ? प.पू. पप्पाजी ने उत्तर दिया कि–

❋ *महाराज और गुरुहरि से निरंतर भरे रह कर उनकी ही प्रसन्नता के लिए जो-जो करें वो* ***ब्रह्मानंद !***

❋ *भक्तों की सेवा-भक्ति के निमित्त बनने का आनंद आया करे वह* ***ब्रह्मानंद !***

❋ *गुरु को अंर्तयामी मान कर पल-पल का वर्तन करना वह* ***ब्रह्मानंद !***

आनंद अनेक प्रकार के होते हैं–

❖ *पतंगा मोह के वश में दीये के आस-पास मंडराता है। आख़िर उसमें जल कर मर जाता है–वह* ***है वृत्ति का आनंद !***

❖ *देशभक्त देश के लिए हँसते-हँसते फांसी पर चढ़ जाता है–वह है* ***सात्त्विक अहं का आनंद !***

❖ *भोगबुद्धि से मनपसंद सेवा किया करने का आनंद–वह* ***स्वभाव का आनंद !***

❖ *भक्ति की आड़ में मनमाने ढंग से–'मैं तो इतनी सेवा-भक्ति करता हूँ'–यूँ निजी ढंग से आलस-प्रमाद रखते हुए जो करें–वह* ***देहात्मबुद्धि का आनंद !***

❖ *गुरु की आज्ञा भी निजी ढंग से पाल कर राजी हो व अपने मन में खुश हो– वह* ***आत्मानंदी !***

❖ *गुरुमुखी रह कर गुरु के अभिप्राय की भक्ति करनी व निमित्त बन कर गुरु की रीति से अपने इक्यावन भूतों को नचाए और सिर्फ गुरु की ही प्रसन्नता पाने की इच्छा रखे – वह* ***ब्रह्मानंदी !***

यूं अनेक प्रकार के आनंद तो हम (जाने-अनजाने) करते ही रहते हैं। पर, **हम तो सिद्धदशा पाने निकले हैं ! सो, पल-पल कर्ता हर्ता प्रभु को मान कर, उसकी लीला मान कर ब्रह्मानंद ही किया करना है।**

ऐसे ही–एक बार प.पू. पप्पाजी ने बात करी कि– सभी के स्वभाव अलग-अलग होते हैं। भगवान सभी चैतन्य को आगे ले जा रहे हैं। डोरी संचालन उनके हाथ में है।

यह बात सुन कर एक मुक्त ने कहा कि धीरे-धीरे नहीं, पर जल्दी करना है उसकी चिंता है।

प.पू. पप्पाजी बोले कि– जल्दी नहीं हो सकता, क्योंकि वृत्तियों को जड़ से निर्मूल करना है।

किसी की आध्यात्मिक प्रगति के काजी कभी नहीं होना। (अपनी डायरी में) यह लिख कर रखो। वह मुक्त जाने और भगवान जाने। किसी मुक्त की रीत अगर हमें नहीं जँचती है, तो सह लेना। **हमें वही सूक्ष्म तप करना है।** आध्यात्मिकता को अपनी बुद्धि से कभी नापना नहीं।

किसी मुक्त ने कहा कि प्रसंग तो बनते ही रहते हैं। प.पू. पप्पाजी बोले– **प्रसंग बनते नहीं, बल्कि प्रभु ही लाते हैं-खड़े करते हैं।** कर्ता-हर्ता सिर्फ प्रभु को ही मानो। फलां-फलां व्यक्ति की वजह से प्रसंग बना ऐसा नहीं सोचना। बस, **(निष्ठा वालों में) सब कुछ प्रभु नियंत्रित है।** खास ध्यान रखो–**(उनमें) पल-पल का संचालन प्रभु ही करते हैं।'**

'गुणातीत ज्योत' की बहनों की भक्ति, सेवा, जाग्रतता, गरज, महिमाभरी दृष्टि को अंतर से कोटि-कोटि वंदन कि उन्होंने समय-समय पर प.पू. पप्पाजी से ऐसे प्रश्न पूछ कर प्रभु की राह पर अग्रसर होने वाले हर एक साधक के लिए अत्यंत सरल सहज मार्ग प्रशस्त कर दिया।

प.पू. पप्पाजी द्वारा दिए गए उत्तर युगों-युगों तक हर एक मुमुक्षु की व्यवहारिक व आध्यात्मिक उलझनों को सुलझा कर, सूक्ष्म स्वभावों की गुत्थियों में से बाहर निकाल कर, मन-स्वभाव-जड़ता के गहन अंधेरों में एक दिव्य प्रकाश की ज्योति सदैव प्रज्वलित करते ही रहेंगे।

हे पप्पाजी ! इस पुनित पर्व पर आपके चरणों में प्रार्थना कि अब हम सब 'अहम् शून्य' बन कर, आपका अभिप्राय यानि–

प्रभु के संबंध वाले भक्तों की सेवा करके संप, सुहृद्भाव, एकता से जीकर आपको निश्चिंत कर दें,

हमारी हठ, मान, ईर्ष्या की गाठों को जब आप मुक्तों द्वारा पिघालो, तब केवल आपको ही कर्ता-हर्ता मान कर अंतःकरण को साफ होने दें, जिससे कि हमारा **'भागवती तनु'** बनाने का आपका संकल्प साकार हो

और

प्रभु व आपके प्रति का आस्तिकभाव-आस्था दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही रहे...

हमारे प्रति अनोखी प्रीति के वश आज अपनी देह पर इतने अधिक कष्ट लेकर भी हमें निःस्वार्थ प्रेम देकर, स्थूल दर्शन का दिव्य सुख देते हुए आप हमें खुश ही रखना चाहते हैं। तो अब हम वृत्ति अखंड आप में ही जुड़ी रखते हुए आपको **'प्रत्यक्ष'** करके जिएं और मूर्ति अखंड धारते हो जाएं–

ऐसी आपके श्रीचरणों में प्रार्थना !

जीव का रक्षाकवच — रक्षाबंधन !

भाई-बहन का पवित्र रिश्ता एवं गुरु-शिष्य के प्रगाढ़ बंधन का प्रतीक यानि– **रक्षाबंधन-राखी-श्रावणी पूर्णिमा...** अब की बार **30 अगस्त, सोमवार** के दिन आ रही है। जगत में तो इस पर्व की 'पवित्रता' का अपना महत्त्व है ही। परंतु, आध्यात्मिक दृष्टि से गुरु-शिष्य का दिव्य संबंध तो जन्मों जन्म का होने पर इस पर्व का गौरव अत्यधिक बढ़ जाता है।

प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप की प्राप्ति होते ही सांसारिक राग-रस तो उसके संबंध मात्र से टल जाते हैं और नए दिव्य संबंधों की शुरुआत होती है। **नैतिक मूल्यों-संबंधों की अपेक्षा आध्यात्मिक मूल्य-प्रभु का संबंध अनंत गुणा अधिक मूल्यवान है।**

जगत के लौकिक संबंधों का आधार सूक्ष्म रूप से भी किसी ना किसी परिप्रेक्ष्य में स्वार्थपूर्ण होता है। जबकि, आध्यात्मिक दिव्य संबंधों का केन्द्रबिन्दु केवल प्रत्यक्ष स्वरूप होता है... **वे संबंध निरपेक्ष व शाश्वत्-सनातन होते हैं।**

प्रत्यक्ष समर्थ गुरु –

❋ *अपनी शरण में आए शिष्य की शीघ्र पूर्णाहुति कराने की संपूर्ण जिम्मेदारी लेते हैं।*

❋ *शिष्य को अपने दिव्य प्रेम के बंधन में बांध कर जन्मों की जड़ता की मैल को धोकर साफ-सुथरा करके उसके हृदय रूपी सिंहासन पर प्रभु की मूर्ति स्थापित कर देना ही उनका एकमात्र उद्यम होता है।*

❋ *शिष्य यदि प्रत्यक्ष स्वरूप को हर प्रसंग का कर्ता-हर्ता, प्रेरक, प्रवर्तक, नियंता मान कर, दृढ़ निष्ठा से उनकी स्मृतियों में डूबे रह कर एकमात्र भजन का ही सर्वोपरि उपाय ले, तो वे उसकी हर प्रकार से रक्षा करके आंतर व बाह्य कुरुक्षेत्र का अंत ला करके तन, मन, धन व आत्मा से सुखी-सुखी कर देते हैं।*

हम सब कितने सौभाग्यशाली कि हमें गुरु गुणातीत का अखंडित वारसा रखे हुए प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी व प्रगट गुणातीत स्वरूप मिले ! हमारे चैतन्य के विकास के लिए हमारी पूर्णाहुति कराने दिन-रात वे अथक् परिश्रम कर रहे हैं।

'रक्षाबंधन' व **प.पू. पप्पाजी की जयंती** के करीब के दिनों में ही प.पू. काकाजी महाराज ने खूब करुणा करके साधना को सरल बनाने हेतु एक सही सचोट-स्पष्ट दिशा दिखाने व संत के साथ का दिव्य संबंध एवं उनके अंतर की प्रसन्नता पाने के सरल उपाय बताते हुए लंदन से साधकों को निम्न पत्र लिखा था...

आइए, इस पत्र के एक-एक शब्द को समझ कर अपने वर्तन में लाकर प्रत्यक्ष स्वरूपों के पास खुल्ले दिल से गद्‌गद् कंठ से प्रार्थना करें, मन-बुद्धि के तर्क, शंका-आशंका का शटर टोटल बंद कर दें व उनके बताए रास्ते पर चल कर उन्हें प्रसन्न कर लें और... जगत से **'अनोखा रक्षाबंधन'** मनाएं !

स्वामिश्रीजी सत्य हैं

लंदन
२३-८-८१

आशीर्वाद पत्र-साधक वर्ग के लिए हैः–

परम भगवदी...

लि. आप के ही दादुकाका, बापु, राजु, हिंमतस्वामी, योगी तथा सभी युवकों के स्नेहपूर्वक जय श्री स्वामिनारायण !

१. यहाँ भी युवक बहुत ही दिव्यता से सेवा कर रहे हैं और तीन बड़े उत्सवों की व्यवस्था कर दी है। किसी की भी टीकाचर्चा, आलोचना या भाष्य ही नहीं। केवल पू. साहेब के ही होकर जीते हैं और आज्ञा ! 'किसी का देखना नहीं, किसी के बारे बोलना भी नहीं'–प.पू. बापा का वही परम सूत्र जीवन में उतारते जाते हैं। सो, सभी बड़े पुरुषों को जबरन् भी राजी होना ही पड़े और अंतर के आशीर्वाद देने पड़ें। **हमारी ही अस्मिता पूरी तरह टली ना हो, वहाँ सद्‌गुरु बन कर बैठने की औकात कहाँ ?** तो मूर्ति में ही रह कर, पूर्ण रूप से **किसी ना किसी प्रत्यक्ष स्वरूप के होकर** टोटली-कम्प्लीटली, अनकन्डिशनली जीने का दृढ़ संकल्प और प्रतिज्ञा पक्की-दृढ़ होनी ही चाहिए।

उसके मुताबिक साधक वर्ग को तो **दो बार** 'स्वरुप-उपशम' करके रात को **प्रायश्चित रुप प्रार्थना**–नियम से दृढ़ता रख कर **अचूक ही कर लेनी पड़े।** तो निश्चित किया हुआ निशान हॉसिल हो सकेगा। उसमें समझौता होता नहीं। 'यह-यूं ही'– वो सिद्धांतिक बात सभी जानते हैं, दूसरे को समझाते हैं; लेकिन खुद पर जब प्रसंग प्रभु लाते हैं, तब ज़रा-

सी बौद्धिक भावना वाला तर्क लगा करके, लुकाछिपी करके अभिनिवेश में चला लेते हैं और दूसरे पर दोष मढ़ देते हैं। अब यह परम सत्य है, वह पक्का घोटना है। विराट दर्शन जैसे कई अनुभव हुए, प्रवचनों में भी कहे होंगे, लेकिन **हम ही वह पकड़े न रखें तो साधकों में दस गुणा दिखाई दें।** सो, **हम में ही संपूर्ण बदलाव-परिवर्तन-टोटल प्रभु कराएं ऐसी तीव्र अभीप्सा रख कर प्रायश्चित रुप प्रार्थना सभी बड़ों को कर लेनी।** जीवन के पुराने लेखे-जोखे निकालें तो स्पष्ट ख़्याल तो पड़ ही जाए ऐसा है। लेकिन हम ही अब अपना पूरा कर लेने का रखें; तो बाकी का पू. बापा ही सब सिर पर ले ही लेंगे, द्विशताब्दी उत्सव से तुमने वह अनुभव किया होगा ही। तो, अब इस रहस्य की जरुर पूर्णाहुति कर ही लेना और साधकों को करवाना।

२. देहभाव और जीवभाव टालने–दो समय का पक्का स्वरुपयोग और सत्कर्म रूपी सेवा सभी मुक्तों को भी करना ही होता है और तभी ब्रह्मस्वरुप वर्त पाएंगे। वर्ना बराबरी का भाव आ जाता है। सद्गुरुपन, आशीर्वाद देना और पुजवाना भला किसे नहीं जँचता ? ऐसी ढोंगी, दंभभरी, बनावटी भक्ति का लेश भी रहे, तो प्रभु बड़ा दंड महामुक्तों को, एकांतिकों को, मंडलधारियों को और दूसरों का दृष्टा स्थापित करने वालों को भी खुल्ला देते हैं। वह तो वे ही समझें या तो अति बड़े (पुरुष) ही समझें। सो, पू. बापा का-मौज में अक्षरधाम देने का सकंल्प स्वीकार कर सभी सिर्फ जतन ही करें, तो भी सरलता से एकांतिकभाव सिद्ध होगा। सो, दिखावे के लिए नहीं, बल्कि दिल से ही साधक वर्ग **सेवक के सेवक बनने की** आदत डाले और ऐसी मौज जो मुफ्त में ही मिली है, वह (साथी-मुक्तों के साथ) **जोड़ करके-जोड़ करके-जोड़ करके** आनंद से भोगें और सरलता से निर्दोषबुद्धि दृढ़ करें ऐसे अंतर के आशीर्वाद हैं।

३. **प्रगट के उपासक तो सभी हैं ही, लेकिन प्रत्यक्ष के सच में होना है।** वह पक्का ही समझ कर, उसके लिए **जोड़ करके लग पड़ने वाले को ही अनुग्रह शक्ति के आशीर्वाद प्राप्त होते हैं।** वर्ना तो प.पू. बापा ने प.भ. अश्विन नारवाले को कहा था कि– आशीर्वाद तो खूब दिए, लेकिन सभी धोकर पी गए। वैसा अब नहीं करना है। जिसे एकांतिक धर्म सिद्ध नहीं ही-नहीं ही करना हो उसे कोई भी आग्रह नहीं है, दबाव नहीं है या कोई प्रेस्टीझ इश्यु-आबरु जाने वाली नहीं। तो ना करें और '**सामान्य (कक्षा के) मुक्त**' रह कर, आनंद से अंत में संसार-जगत में रह कर आख़िरी जन्म कर लें और संबंध योग का एवं व्यवहारिक सुख भोगें।

परंतु, **साधक को तो जान पर खेल जाने वाला बनना ही पड़ेगा।** तब ही दुर्लभ से भी दुर्लभ ऐसा एकांतिकभाव–सरलता से, बड़े पुरुषों की कृपा और अनुग्रह से ही सिद्ध हो जाएगा। प.भ. कोठारीस्वामी, पू. प्रेमस्वामी, पू. भरतभाई, पू. साहेब, पू. सनंद, पू. अश्विनभाई, पू. शांतिभाई जैसों ने तो सिद्ध भी कर लिया है और दूसरों को भी शांति-शांति करा देते हैं। ऐसे परम भागवत संत, सिद्धों-ब्रह्मस्वरूपों पू. स्वामिजी, पू. पप्पाजी, पू. काकाजी, पू. महंतजी की महिमा समझाते हैं। पू. साहेब और पू. कोठारीजी तो अद्वितीय स्थिति को पा गए हैं। दूसरे संत भी उसके लायक हों ही। तो, वह वारसा–वैसी पात्रता व संतता प्राप्त करके, तुम सभी जल्दी ही दृढ़ कर लो– यही अंतर की प्रार्थना है।

४. **अज्ञान तो टला, लेकिन अस्मिता बाधा रूप होती है।** वह, '**गुणातीत अस्मिता**'– यानि कि '**मैं प्रत्यक्ष स्वरुप का-प.पू. बापा का ब्रह्मस्वरूप ऐसा दास हूँ**'–ऐसी जाग्रतता अखंड ही रहे और 'संबंध वाले सभी मुक्त' दिव्य ही माने जाएं, ऐसी दृष्टि और अविरोधवृत्ति हो जाए (ब्रह्मनियंत्रित समाज माना जाए) ऐसा बड़े (सत्पुरुष) के पास अज्ञानी से भी अज्ञानी बन कर पल-पल माँगना है। **बड़ों के पास रंकभाव और दीनभाव रखे वह चालाकी गिनी जाए, लेकिन संबंध वालों के पास रखे-वही सच्ची मानसिक प्रमाणिकता-सिन्सियारिटी एण्ड ऑनेस्टी गिनी जाए।** सभी को अंतर से यह समझ लेना है। इसलिए ऐसी जोड़ करके जो डाँटे-टोके उसका केवल गुण ही लेकर प्रार्थना करें, तो प्रभु दिखा ही देंगे और आगे ले ही जाएंगे। सोः–

५. **भूतकाल बिलकुल ही भूल कर, भविष्य की चिंता छोड़ कर,** वर्तमान में ही **आज ही–अभी से**-पत्र पढ़ने वाला भी और सुनने वाला भी लग ही पड़ना और **जिसे प्रत्यक्ष स्वरूप मानते हो उसे**-किसी को तो मानना ही पड़ेगा–उसके पास उसके ही चरणों में सर्वस्व रख कर सर्वार्पण-सेल्फ सरन्डर और आत्मसमर्पण–फिर आत्म निवेदन करके, रंक होकर, गद्गद् कंठ से **प्रार्थना करोगे तो उनकी प्रसन्नता से ही 'गुणातीत अस्मिता' प्रगट होगी** और वह भावना अमर बन

कर परब्रह्म की सेवा, संबंध वालों की स्वधर्मयुक्त सेवा हुआ ही करेगी। यह है सच्चा प्रकाशमय चिदाकाश का जीतेजी 'अक्षरधाम' ! वह सभी प्राप्त करो यही हम सभी बड़ों का संकल्प है। तो ऐसी आध्यात्मिक विनम्रता प्रगटे और साधुता, समता, सरलता और सुहृद्भाव जैसे दिव्य गुण तुम्हारे जीवन में सहज ही बनें—ऐसी सहजानंद कॉन्सशियसनेस सिद्ध करो यही गुरुचरणों में प्रार्थना है।

जस्ट नॉक धी इनर डॉर, एण्ड इट विल ओपन-इनटु धी डिवाईन कॉन्सियसनेस-लीडिंग टु सहजानंद कॉन्सियसनेस ! विथ लव एण्ड ब्लेसिंग्स –

यार्स **दादुकाकाझ जय स्वामिनारायण** !

सभी को-सर्व साधकों को-सर्वत्र प.पू. पप्पाजी के जन्मदिन पर-पहली सितंबर के आशीर्वाद !

– प.पू. काकाजी महाराज

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 11.7.2004, रविवार — *उत्तर भारत के मुक्तों के प्राणाधार प.पू. गुरुजी ने 1954 में आज के दिन मुंबई-सुंदराबाई हॉल में गुरुवर्य योगीजी महाराज और गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रथम बार दर्शन किए थे। उस मंगलकारी दिन को पचास वर्ष पूरे होने का दिन !*

(2) दि. 28.7.2004, बुधवार — एकादशी, व्रत

(3) दि. 11.8.2004, बुधवार — एकादशी, व्रत

(4) दि. 15.8.2004, रविवार — भारत का स्वातंत्र्य दिन

(5) दि. 17.8.2004, मंगलवार — श्रावण महीना प्रारंभ

(6) दि. 26.8.2004, गुरुवार — पवित्रा एकादशी, व्रत—ठाकुरजी को पवित्रा के हार पहनाने

(7) दि. 30.8.2004, सोमवार — श्रावणी पूर्णिमा—राखी

(सुबह 7:30 से 9:00 प.पू. गुरुजी की निश्रा में सच्चा रक्षाकवच प्राप्त करने प्रार्थना करेंगे। जो इस समय पर ना आ पाएं, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'राखी' बंधवा सकेंगे।)

(8) दि. 1.9.2004, बुधवार — प्र.ब्र. स्व. प.पू. पप्पाजी का प्रागट्य दिन

(9) दि. 3.9.2004, शुक्रवार — नाग पंचमी

(10) दि. 4.9.2004, शनिवार — रांधण छठ (षष्ठी)

(11) दि. 5.9.2004, रविवार — शीतला सातम (सप्तमी)

(12) दि. 7.9.2004, मंगलवार — जन्माष्टमी, व्रत

(13) दि. 10.9.2004, शुक्रवार — एकादशी, व्रत

R.N.I. 28971/ 77

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'*Taad-dev*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327, 2724 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi